सृष्टिक आरम्भ

शुरू मे

१ १-२ शुरू मे परमेश्वर आकाश और पृथ्वीक सृष्टि
कयलन्हि। पृथ्वी बिना-आकारक और सून-सान छल।
अथाह जलक ऊपर अन्हार छल, और परमेश्वरक आत्मा जलक
ऊपर मर्राइत छलन्हि।
३-५ तखन परमेश्वर कहलन्हि, "इजोत होअय!" और
इजोत भऽ गेल। परमेश्वर इजोत कैँ देखलन्हि जे ओ नीक
अछि। इजोत कैँ अन्हार सँ अलग कयलन्हि, और इजोत कैँ
"दिन" और अन्हार कैँ "राति" नाम देलन्हि। साँझ भेल, फेर
भोर भेल, और एहिना पहिल दिन भऽ गेल।
६-८ तखन परमेश्वर कहलन्हि, "जलक मध्य मे एहन अन्तर
होअय जे जल दू भाग भऽ जाय।" परमेश्वर एक अन्तर बना
कऽ ओकरा सँ ऊपरक जल और ओकरा सँ नीचाक जल कैँ
अलग-अलग कयलन्हि। तहिना भैयो गेल। एहि अन्तर कैँ
परमेश्वर "आकाश" नाम देलन्हि। साँझ भेल, फेर भोर भेल,
और एहिना दोसर दिन भऽ गेल।
९-१० तखन परमेश्वर कहलन्हि, "आकाशक नीचाक जल
एक ठाम जमा भऽ जाय और सुखल भूमि देखाइ देअय।"
तहिना भैयो गेल। परमेश्वर सुखल भूमि कैँ "जमीन" और जमा

भेल जल कैँ "समुद्र" नाम देलन्हि । और परमेश्वर देखलन्हि जे ओ नीक अछि ।

११-१३ तखन परमेश्वर कहलन्हि, "जमीन सभ रंगक घास-पात—बीआ वला गाछ और फल वला गाछ जकर फल मे अपना अपना जातिक अनुसार बीआ छैक, से जनमाबय ।" तहिना भैयो गेल । जमीन सभ रंगक घास-पात कैँ जनमौलक—रंग-बिरंगक बीआ वला गाछ और फल वला गाछ जकर फल मे अपना अपना जातिक अनुसार बीआ छलैक । परमेश्वर देखलन्हि जे ओ नीक अछि । साँझ भेल, फेर भोर भेल, और एहिना तेसर दिन भऽ गेल ।

१४-१९ तखन परमेश्वर कहलन्हि, "दिन कैँ राति सँ अलग करबाक हेतु आकाशक मध्य मे ज्योति-पिण्ड होअय । ओ सभ ऋतु, दिन और वर्षक चेन्ह होअय, और पृथ्वी पर इजोत करबाक लेल ओ आकाश मे ज्योति-पिण्ड होअय ।" तहिना भैयो गेल । परमेश्वर दूटा पैघ ज्योति-पिण्ड बनौलन्हि । बेसी इजोत करऽ वला कैँ दिनक शासक, और कम इजोत करऽ वला कैँ रातिक शासक बनौलन्हि । तारा सभ सेहो बनौलन्हि । परमेश्वर ओकरा सभ कैँ आकाशक मध्य मे रखलन्हि जाहि सँ पृथ्वी पर इजोत करय, दिन और राति पर शासन करय, और प्रकाश कैँ अन्हार सँ अलग करय । परमेश्वर देखलन्हि जे ओ नीक अछि । साँझ भेल, फेर भोर भेल, और एहिना चारिम दिन भऽ गेल ।

२०-२३ तखन परमेश्वर कहलन्हि, "समुद्र जीबैत जल-जन्तुक झुण्डक-झुण्ड उत्पन्न करय, और पृथ्वीक ऊपर आकाशक मध्य

मे चिड़ै उड़य ।" अतः परमेश्वर बड़का-बड़का समुद्री जानबर और सभ प्रकारक जीबैत प्राणी जे हेलैत अछि या पानि मे चलैत अछि, जकरा सँ समुद्र भरल छैक, सभ कँ अपना अपना जातिक अनुसार बनौलन्हि । सभ रंगक चिड़ै कँ अपना अपना जातिक अनुसार सेहो बनौलन्हि । परमेश्वर देखलन्हि जे ओ नीक अछि । परमेश्वर ओकरा सभ कँ ई कहैत आशीष देलन्हि जे, "फड़ह-फुलाह, और समुद्र कँ भरि दैह, और पृथ्वी पर चिड़ै अनगणित भऽ जाय ।" साँझ भेल, फेर भोर भेल और एहिना पांचम दिन भऽ गेल ।

२४-२५ तखन परमेश्वर कहलन्हि, "पृथ्वी जानबर सभ कँ अपना अपना जातिक अनुसार उत्पन्न करय—घरैआ पशु, जमीन मे ससरऽ वला जीव-जन्तु, और जंगली जानबर ।" और तहिना भैयो गेल । परमेश्वर सभ रंगक जंगली जानबर, घरैआ पशु और जमीन मे ससरऽ वला जीव-जन्तु सभ कँ अपना अपना जातिक अनुसार बनौलन्हि । और परमेश्वर देखलन्हि जे ओ नीक अछि ।

२६-२८ तखन परमेश्वर कहलन्हि, "हम सभ मनुष्य कँ अपने स्वरूप मे, अपने जकाँ, बनाबी । समुद्रक जीव-जन्तु पर, आकाशक चिड़ै पर, घरैआ पशु पर, जमीन मे ससरऽ वला जीव-जन्तु पर, और सम्पूर्ण पृथ्वी पर मनुष्यक अधिकार होअय ।" अतः परमेश्वर अपन स्वरूप मे मनुष्य कँ बनौलन्हि; परमेश्वर अपनहि स्वरूप मे पुरूष और स्त्री कँ बनौलन्हि । परमेश्वर ओकरा सभ कँ ई कहि कऽ आशीर्वाद देलन्हि जे, "फड़ह, फुलाह, पृथ्वी कँ भरि दैह, और ओहि पर अपन

अधिकार कऽ लैह । समुद्रक जीव-जन्तु, आकाशक चिड़ै और
भूमि पर चलऽ वला सभ जीबैत प्राणी पर तोहर अधिकार
हयतह ।"
२९-३० तखन परमेश्वर कहलन्हि, "देखह, पृथ्वीक सभ
बीआ वला गाछ और सभ फल वला गाछ जकरा फल मे बीआ
छैक, हम तोरा दैत छिअह । ओहि मे सँ तोँ भोजन करह । और
पृथ्वीक सभ जानबर कैँ, आकाशक सभ चिड़ै कैँ, और जमीन
मे ससरऽ वला सभ जीव-जन्तु कैँ, अर्थात् सभ प्राणी जकरा मे
जीवनक साँस छैक, सभ कैँ हम हरियर घास-पात भोजनक लेल
दैत छी ।" तहिना भैयो गेल ।
३१ परमेश्वर अपन रचना कयल सम्पूर्ण सृष्टि कैँ देखलन्हि जे
ओ बहुत नीक अछि । साँझ भेल, फेर भोर भेल, और एहिना
छठम दिन भऽ गेल ।

२ १-३एहि प्रकारेँ आकाश और पृथ्वी एवं जे किछु ओहि मे
अछि, एहि सभक रचना पूर्ण भऽ गेल। परमेश्वर सभ
काज केँ पूरा कऽ कऽ, सातम दिन ओ ओहि समस्त काज सँ
विश्राम कयलन्हि। ओ सातम दिन केँ आशीष देलन्हि और
पवित्र बनौलन्हि किएक तँ सातम दिन ओ अपन सृष्टिक काज सँ
विश्राम कयलन्हि।

रचनाक वृत्तान्त

४-६आकाश और पृथ्वीक रचनाक यैह वृत्तान्त अछि—
प्रभु-परमेश्वर पृथ्वी और आकाश केँ जखन बनौलन्हि,
ओहि समय मे पृथ्वी पर कोनो मैदानक घास-पात नहि छल,
और कोनो खेतक गाछ अंकुरित नहि भेल छल, किएक तँ प्रभु-
परमेश्वर पृथ्वी पर वर्षा नहि करौने छलाह, और जमीन जोतऽ
लेल मनुष्यो नहि छल। पृथ्वी मे सँ तावा फूटि कऽ पूरा जमीन
केँ पटाबए।
७तँ प्रभु-परमेश्वर पृथ्वीक माटि सँ मनुष्य केँ गढ़लन्हि।
ओकर नाक मे जीवनक साँस फुकलन्हि और मनुष्य एक जीबैत
प्राणी बनि गेल।
८-१४प्रभु-परमेश्वर पूब दिस एदन नामक स्थान मे एक
बागिचा लगौने रहथि। ओहिठाम ओ मनुष्य केँ, जकरा ओ
बनौने छलाह, राखि देलन्हि। प्रभु-परमेश्वर सभ रंगक गाछ
केँ, जे देखऽ मे सुन्दर छल और खाय मे नीक छल, ओहि गाछ
सभ केँ जमीन सँ उपजौलन्हि। बागिचाक बीच मे जीवनक गाछ
और नीक-अधलाहक ज्ञानक गाछ लगौलन्हि। एकटा धार,

बागिचा कैँ पटयबाक हेतु, एदन सँ बहैत, बागिचा सँ निकलल, और ओहिठाम सँ चारिटा धार भऽ गेल । पहिलाक नाम अछि पीशोन, जे हविला देश मे चारू कात घूमि कऽ बहैत अछि, जतऽ सोना भेटैत अछि । (ओहि देशक सोना वहुत नीक होइत अछि; ओहिठाम मोती और सुलेमानी पाथर सेहो भेटैत अछि ।) दोसर धारक नाम अछि गीहोन, जे कुश देश मे चारू कात घूमि कऽ बहैत अछि । तेसर धारक नाम अछि तीग्रीस, जे आशूर सँ पूब बहैत अछि । चारिम धारक नाम अछि फरात ।

१५-१७ प्रभु-परमेश्वर ओहि मनुष्य कैँ लऽ जा कऽ एदनक बागिचा मे राखि देलन्हि जे ओ ओकर काज करय और ओकर देख-रेख करय । प्रभु-परमेश्वर मनुष्य कैँ ई आज्ञा देलन्हि, "तोँ बागिचाक सभ गाछक फल खा सकैत छह, मुदा नीक-अधलाहक ज्ञानक गाछक फल नहि खैहह, कारण जाहि दिन तोँ ओकर फल खयबह, तोँ अवश्य मरि जयबह ।"

१८-२० तखन प्रभु-परमेश्वर कहलन्हि, "मनुष्यक असगरे रहनाइ नीक नहि । हम ओकरा लेल एकटा एहन सहायक बनायब जे ओकरा सँ मेल खाय ।" प्रभु-परमेश्वर माटि सँ पृथ्वीक सभ जानबर और आकाशक सभ चिड़ै कैँ बनौने छलाह । सभ कैँ ओ मनुष्य लग अनलन्हि जे, देखी, मनुष्य ओकरा सभक की की नाम राखत । प्रत्येक जीव-जन्तुक, जे जे नाम मनुष्य रखलक, ओकर वैह नाम भऽ गेल । एहिना मनुष्य सभ घरैआ पशु, आकाशक चिड़ै और जंगली जानबरक नाम रखलक । मुदा मनुष्यक लेल कोनो एहन सहायक नहि भेटल जे ओकरा सँ मेल खाय ।

२१-२४ तैं प्रभु-परमेश्वर मनुष्य कैं भारी निन्द मे सुता देलन्हि। जखन ओ सुतल छल तखन ओ ओकर एक पाँजरक हड्डी कैं निकालि कऽ माँसु लऽ कऽ ओहि जगह कैं फेर भरि देलन्हि। तखन प्रभु-परमेश्वर ओहि पाँजरक हड्डी सँ, जकरा मनुष्य मे सँ निकालने छलाह, स्त्री कैं बनौलन्हि, और ओकरा मनुष्य लग अनलन्हि। मनुष्य कहलक,

"आब ई हमरे हड्डीक हड्डी थीक,
हमरे माँसुक माँसु थीक!
ओकर 'स्त्री' नाम राखल जायत,
कारण ओ पुरूष मे सँ निकालल गेल अछि।"

एहि कारण पुरूष अपन माय-बाबु कैं छोड़ि कऽ अपन स्त्रीक संग रहत, और दुनू एक भऽ जायत।

२५ पुरूष और ओकर स्त्री दुनू नंगटे रहैत छल, और ओकरा सभ कैं कोनो लज्जा नहि छल।

मनुष्यक पतन

३ १ जतेक जानबर प्रभु-परमेश्वर बनौने छलाह, ओहि मे सँ सभ सँ धूर्त साँप छल। साँप स्त्री सँ पुछलक, "की सत्ये परमेश्वर कहलन्हि जे एहि बागिचाक कोनो गाछक फल नहि खयबाक चाही?"

२-३ स्त्री साँप कैं उत्तर देलक, "हम सभ बागिचाक सभ गाछ सँ फल तँ खा सकैत छी, मुदा परमेश्वर ई कहलन्हि जे, जे गाछ बागिचाक बीच मे छैक, तकर फल ने खाह ने छूबह—नहि तँ मरि जयबह।"

४-५ साँप स्त्री कैँ कहलक, "तौँ नहि मरबह! कारण
परमेश्वर जनैत छथि जे जखने तौँ ओहि फल कैँ खयबह तखने
तोहर आँखि फूजि जयतह और तौँ नीक और अधलाह कैँ जानि
कऽ परमेश्वर जकाँ भऽ जयबह।"

६ स्त्री ई देखि जे ओहि गाछक फल खाय मे नीक होयत,
देखऽ मे सुन्दर अछि, और बुद्धि प्राप्त करबाक लेल इच्छा-योग्य
अछि, फल तोड़ि कऽ खा लेलक। अपन घरवला कैँ, जे
ओकरा संग छल, तकरा सेहो देलकैक, और ओहो खयलक।

७ तखन दुनूक आँखि फूजि गेल, और ज्ञान भेलैक जे नंगटे
छी। अतः अन्जीर गाछक पात कैँ जोड़ि-जोड़ि कऽ अपना लेल
खौरकी बनौलक।

८-९ तखन पुरूष और ओकर स्त्री प्रभु-परमेश्वरक साँझ
खन कऽ बागिचा मे टहलबाक आवाज सुनलक, और
बागिचाक गाछ सभक मध्य मे प्रभु-परमेश्वर सँ अपना कैँ नुका
लेलक। मुदा प्रभु-परमेश्वर मनुष्य कैँ सोर पाड़लथिन्ह, "तौँ
कतऽ छह?"

१० ओ उत्तर देलकन्हि, "अपनेक आवाज बागिचा मे
सुनलहुँ और डेरा गेलहुँ, किएक तँ हम नंगटे छलहुँ; तैं हम
अपना कैँ नुका लेलहुँ।"

११ तँ ओ कहलथिन्ह, "तोरा के कहलकह जे तौँ नंगटे
छह? की ओहि गाछक फल खयलह जाहि गाछक फल तोरा
खयबाक लेल हम मना कयने रहिअह?"

१२ पुरूष बाजल, "जाहि स्त्री कैँ अहाँ हमरा संग रहबाक
लेल देलहुँ, वैह ओहि गाछक फल हमरा देलक और हम
खयलहुँ।"

१३ तखन प्रभु-परमेश्वर स्त्री कँ कहलथिन्ह, "ई तोँ की
कयलह?" स्त्री कहलकन्हि, "साँप हमरा ठकि लेलक और हम
खयलहुँ।"

१४-१५ तैं प्रभु-परमेश्वर साँप कँ कहलथिन्ह, "तोँ ई काज
कयने छें, तैं :

सभ घरैआ पशु और जंगली जानबर मे तोँही
शापित छें।
तोँ पेट भरे चलबें,
और जीवन-भरि तोँ गर्दा चाटैत रहबें।
हम तोरा और स्त्रीक बीच
तथा तोरा वंश और स्त्रीक वंशक बीच मे
दुश्मनी उत्पन्न करा देबौ :
ओ तोहर मस्तक कँ थूड़ि देतौ
और तोँ ओकरा ऐड़ी मे डसबही।"

१६ स्त्री कँ ओ कहलन्हि,
"हम तोरा गर्भवती होबऽ मे दुःख बहुत
बढ़यबह।
तोँ दर्द सँ बच्चा कँ जन्म देबह।
तैयो तोहर इच्छा घरवलाक लेल हयतह
और ओ तोहर मालिक हयतह।"

१७-१९ आदम कँ (अर्थात पुरूष कँ) ओ कहलन्हि, "तोँ
अपन स्त्रीक बात मानि कऽ ओहि गाछक फल खयलह, जे नहि
खयबाक लेल हम आज्ञा देने रहिअह। एहि लेल,

जाबत तक तोँ जीबह ताबत तक
जमीन तोहर कारण शापित रहत।

ओकर फसिल खयबाक लेल
तौँ जीवन-भरि कठिन परिश्रम करबह ।
जमीन तोरा लेल कांट और झारपात
उपजाओत,
और तौँ खेतक उपजा खयबह ।

तौँ ताबत तक अपन पसेनाक रोटी खयबह
जाबत तक तौँ ओहि माटि मे नहि मीलि जयबह
जाहि सँ तौँ निकालल गेल छह :
माटिए छह, और माटि मे मीलि जयबह ।"

२०-२४ आदम अपन स्त्रीक "हेवा" (अर्थात् "प्राण") नाम रखलक, किएक तँ ओ सम्पूर्ण मनुष्य-प्राणीक माता बनलि । प्रभु-परमेश्वर आदम और ओकर स्त्री कैँ चमड़ाक वस्त्र बना कऽ ओकरा सभ कैँ पहिरा देलथिन्ह । तखन प्रभु-परमेश्वर कहलन्हि, "मनुष्य नीक और अधलाह जानि कऽ हमरा सभ मे एक जकाँ बनि गेल । आब एना नहि होअय जे ओ हाथ बढ़ा कऽ जीवनक गाछक फल तोड़ि लेअय और खा कऽ अमर भऽ जाय ।" तैं प्रभु-परमेश्वर ओकरा सभ कैँ एदनक बागिचा मे सँ भगा देलथिन्ह, जे ओ ओहि भूमि पर खेती करय जाहि मे सँ ओ निकालल गेल छल । मनुष्य कैँ बागिचा मे सँ निकालि कऽ जीवनक गाछक बाटक रखबारी करबाक हेतु, ओ एदन बागिचाक पुबरिया कात मे स्वर्गदूत सभ कैँ और चारू दिशा मे घुमऽ वला धधकैत तरूआरि कैँ सेहो राखि देलन्हि ।

काइन आ हाबिल

FROM DEATH TO LIFE
(Genesis 1:1-11:9
The Gospel According to St. John
and First Epistle of John)
Maithili – 4 MHL 004/85-86/20M/6310

Published by:
The Bible Society of India
20 Mahatma Gandhi Road
Bangalore – 560 001